6

केले का छिलका

(हास्य कविता)

प्रतिध्वनि

जैसा करोगे वैसा भरोगे।

बीच सड़क पर खड़े-खड़े ही,
चौबे जी ने केला खाया।
मुँह बिचकाकर छिलका फेंका,
छड़ी उठाकर कदम बढ़ाया।

पर छिलके पर पैर पड़ गया,
फिसले, फिर गिर पड़े धड़ाम।
पगड़ी बिगड़ी, चश्मा टूटा,
मुँह से निकला, 'मर गए राम'।

छिलका चौबे जी से बोला,
'केले का तो यही मज़ा है।
बीच सड़क पर छिलका फेंकें,
उन लोगों की यही सज़ा है।'

जीवन मूल्य : गलत कार्य करने वालों को उसका फल भी बुरा ही मिलता है।

शब्दार्थ

मुँह बिचकाना	– मुँह चिढ़ाना, मुँह बनाना	**धड़ाम**	– धम से, जोर से
पगड़ी	– सिर पर पहनने का वस्त्र	**सजा**	– दंड